JETIR.ORG ISSN: 2349-5162 | ESTD Year : 2014 | Monthly Issue
JOURNAL OF EMERGING TECHNOLOGIES AND INNOVATIVE RESEARCH (JETIR)
An International Scholarly Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

:– आर्थिक विकास का गांधीवादी मॉडल –:

डा0 प्रकाश सीरवी,
सह आचार्य,
अर्थशास्त्र
एस.पी.सी. राजकीय, महाविधालय,
अजमेर

सारांश –:

गांधी एक व्यक्ति नहीं अवधारणा है, तो कोई अतिश्योक्ति नहीं होगी। गांधी का दृष्टिकोण आदर्शवादी है। गांधी का विकास से तात्पर्य सर्वांगीण विकास से है। जिसमें सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक विकास के साथ–साथ मानव विकास भी शामिल है। गांधी के आर्थिक विकास का मॉडल मानव व प्रकृति दोनों को साथ लेकर चलता है। गांधी के आर्थिक विकास की अवधारणा ने भारत को ही नहीं बल्कि दुनिया को भी प्रभावित किया है।

भारत के आर्थिक विकास के संदर्भ में गांधी ने व्यक्तिवाद, विकेन्द्रीकरण, आदर्श ग्राम, रामराज्य, सर्वोदय, ग्रामीण विकास, प्रन्यास सिद्धान्त, खादी का अर्थशास्त्र, श्रम अर्थशास्त्र, कृषि का नियोजन, व्यावसायिक शिक्षा पर जोर, सर्वोदय, स्वदेशी इत्यादि के माध्यम से एक आत्मनिर्भर अर्थव्यवस्था का दृष्टिकोण प्रस्तुत किया। गांधी के विकास के सिद्धान्त गांधीयन युग (1869 से 1948) के दौरान विकसित हुए, परन्तु वे आज के युग में भी प्रासंगिक हैं। गांधी के सिद्धान्त सत्य व अहिसां पर आधारित हैं, जो भारत के लिए ही नहीं, बल्कि संपूर्ण विश्व के लिए वर्तमान समय को मांग है।

गांधी के कुछ सिद्धान्त वर्तमान में भी विकास के दृष्टिकोण पर वर्तमान परिदृष्य में खरे व प्रासंगिक हैं। गांधीवादी मॉडल का उद्देश्य ळतवे छंजपवदंस भ्ंचचपदमे प्दकमग को ऊपर बढ़ाना है। इस शोध पत्र का मुख्य उद्देश्य गांधीवादी आर्थिक दृष्टिकोण के मुख्य सिद्धान्तों की व्याख्या करना है। आर्थिक विकास का परीक्षण, जो एक सुस्थिर सामाजिक व आर्थिक न्याय व प्रत्येक व्यक्ति व संस्था को एक अच्छा व सुस्थिर जीवन जीने का रास्ता बताएगा।

20 वीं शताब्दी के सबसे प्रभावशाली नेताओं में से एक गांधी हैं। यह अध्ययन गांधी के उन मुख्य सिद्धान्तों व रणनीति का अवलोकन करेगा, जिससे ग्रामीण आत्मनिर्भरता, लघु व कुटीर उधोगों का महत्व, संपत्ति का समान वितरण, रामराज्य इत्यादि को शामिल करते हैं। भारत के आर्थिक परिदृश्य पर गांधी के पूरे जीवनकाल के दौरान व बाद में उनके विचारों का प्रभाव पड़ा। यही इस लेख का उद्देश्य है।

संकेत शब्द –:

सुस्थिर विकास, पर्यावरणीय चेतना, स्थानीय व ग्रामीण सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता, समानता व सामाजिक न्याय

प्रस्तावना –:

गांधी के आर्थिक विकास का दृष्टिकोण किसी भी देश की आर्थिक आत्मनिर्भरता, समानता व अहिंसा के साथ जड़ों से जुड़ा हुआ है। गांधी का अर्थशास्त्र भौतिक व नैतिक दोनों प्रकार की उन्नति को प्राथमिकता देता है। गांधी का शुद्ध आर्थिक विकास का केन्द्र बिन्दु एक व्यक्ति विशेष की गरिमा व मर्यादा से है। वे सभी का कल्याण चाहते थे, जो उनकी सर्वोदय को अवधारणा में परिलक्षित होता है। उन्होनें ग्रामीण विकास व गांवों के सशक्तिकरण पर अत्यधिक बल दिया है। वे आर्थिक प्रगति को भौतिक धन सम्पदा व औधोगिकरण के साथ जोड़ कर नहीं, बल्कि व्यक्ति व समुदाय के कल्याण को ध्यान में रखकर बताते हैं। उनका दृष्टिकोण आदर्शवादी है। गांधीवादी कार्यक्रम समग्र व बहुआयामी है। वे हर व्यक्ति को सशक्त बनाना चाहते थे। उसे जीवन जीने की संपूर्ण क्षमता से परिचित करना चाहते थे, जिससे मानव को आत्मसंतुष्टि हो। उनके दृष्टिकोण में आर्थिक विकास तब है, जब गरीबी दूर हो, हर व्यक्ति को रोजगार मिले, जो आज के परिप्रेक्ष्य में अतिआवश्यक है। जिसके लिए गांधी ने विकेन्द्रीकरण व सर्वोदय जैसी अवधारणाएं दी हैं। आज संपूर्ण विश्व में आतंकवाद का साया व रूस यूक्रेन युद्ध जैसी समस्याएं सालों से चल रही हैं। शांति के प्रयास यधपि जारी हैं किन्तु पर्याप्त नही हैं। ऐसी स्थिति में गांधी के दृष्टिकोण को भुलाया नहीं जा सकता। अर्थात वर्तमान में गांधीवादी मॉडल का औचित्य है।

साहित्य पुनरावलोकन :–

ठक्कर उषा (2011) ने अपने लेख में गांधीवादी दर्शन की सर्वोत्कृष्टता को बताया, कि बाजार को नहीं बल्कि मानवीय मूल्यों को जीवन पर शासन करना चाहिए। इसके साथ ही पर्यावरणीय स्थिरता व सुस्थिर विकास के संदर्भ में गांधी की चिन्ताओं का उल्लेख किया।

सौरभ सत्यभामा (2019) ने लेख में गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता पर पकाश डाला। मानव श्रम की परवाह ना करने वाली कोई भी योजना ना तो मुल्क में संतुलन कायम रख सकती है और ना इंसानों को बराबरी का दर्जा दे सकती है।

तिवारी आर राजनारायण (2019) ने लेख में प्रकृति व पर्यावरण के प्रति गांधी की चिंता को दर्शाया है। शहरीकरण की बुराईयों, अहिसां और संसाधनों का सरंक्षण, जैव विविधता का सरंक्षण, सर्वोदय, पर्यावरणीय स्वास्थ्य को वर्तमान परिप्रेक्ष्य में बताया गया है।

उद्देश्य :–

इस शोध पत्र का उद्देश्य गांधी के आर्थिक विकास के सिद्धान्त को व्यवहार में परिलक्षित करना है। गांधी मुख्य रूप से एक राजनैतिक विचारक थे, पर उनके सुस्थिर व आत्मनिर्भर समाज को स्थापित करना उनके आर्थिक विकास को परिलक्षित करता है। गांधी विकास का मानवीय चेहरा प्रस्तुत करते हैं। लेख के प्रमुख उद्देश्य निम्न हैं :–

1. मानव का भौतिक व नैतिक विकास।
2. शारीरिक व बौद्धिक श्रम के माध्यम से संतुलित विकास (अर्थात शरीर, मन, बुद्धि एवं आत्मा का विकास)
3. स्थानीय व ग्रामीण सशक्तिकरण।
4. न्याय व स्वतंत्रता के साथ विकास।

5. सुस्थिर विकास – ऐसा विकास जो पर्यावरण को सुरक्षित रख सके।
6. गरीबी में कमी लाना।
7. अहिंसा व नैतिकता पर आधारित गतिविधियां।
8. स्वदेशी पर आधारित आर्थिक नीतियों के संभावित लाभ का परीक्षण करना, जैसा कि आयात प्रतिस्थानापन्न लोकल वेन्यू चेन, परम्परागत हस्तशिल्प को आगे बढ़ाना इत्यादि।

वर्तमान युग में गांधीवादी मॉडल की प्रासंगिकता :–

गांधीवादी आर्थिक मॉडल आधुनिक आर्थिक समस्याओं जैसे गरीबी, बेरोजगारी व आर्थिक असमानता के साथ संगठित और समाधानात्मक ढंग से निपटने का प्रस्ताव करता है।

वर्तमान समय में आर्थिक असमानता और अवसरों के गैप को कम करने की आवश्यकता है। गांधीवादी आर्थिक मॉडल न्यायिक व्यवस्था को मजबूत बनाने और समरसता के माध्यमों से सामरिक अवसरों को बढ़ावा देने का प्रस्ताव करता है। इसे व्यापारिक असमता, आर्थिक दलिद्रता, न्यूनतम वेतन, रोजगार सुरक्षा, उधमिता को समर्थन, शैक्षिक अवसरों को सुलभ बनाने के माध्यम से प्राप्त किया जा सकता है।

गांधीवादी आर्थिक मॉडल धर्मनिरपेक्षता, समरसता व विविधता के मूल्यों को प्रोत्साहित करता है। यह मॉडल विभिन्न धर्मो, जातियों, समुदायों और लोगों के बीच सौहाद्रपूर्ण रिश्तों को स्थापित करने के लिए शिक्षा, जागरूकता और वार्तालाप की आवश्यकता को प्राथमिकता देता है।

गांधीवादी मॉडल प्राकृतिक संसाधनों के सदुपयोग और पर्यावरणीय संतुलन को महत्व देता है। इसे शुद्धता के मानकों को बढ़ावा देने, जल सरंक्षण, बायोडाइवर्सिटी की संरक्षा, वनों की संवर्धन, उर्जा संगठनों को विकसित करने के माध्यम से प्राकृतिक संसाधनों को सुरक्षित रखा जा सकता है।

गांधीवादी आर्थिक मॉडल में न्यूनतम उच्चतम मूलभूत सुरक्षा का भाव निहित है। इसके अनुसार लोगों को आवश्यकतानुसार खाध, निर्धनता बचाव, आवास, स्वास्थ्य देखभाल, शिक्षा व भौतिक सुविधाएं प्रदान की जा सकती हैं।

गांधी जी का आर्थिक मॉडल वर्तमान युग में प्रासंगिक व प्रभावी है। क्योंकि यह सामाजिक न्याय, स्वदेशी आत्मनिर्भरता जैसे मौलिक आदर्शों पर आधारित है और सामाजिक व आर्थिक सुधार के लिए मार्गदर्शन प्रदान कर सकता है।

गांधी एवं आर्थिक विकास :–

गांधी के आर्थिक विकास का मॉडल भारत व संपूर्ण विश्व को महामारी व युद्ध जैसी परिस्थितियों से बाहर निकालने में सहायता कर सकता है। गांधी संपूर्ण विकास की बात करते हैं, जिसमें स्थानीय संसाधनों, प्राकृतिक संसाधनों व मानव संसाधनों का सम्मिलित विकास शामिल है। गांधी के सुस्थिर व आत्मनिर्भर समाज को स्थापित करना, उनके आर्थिक विकास के दृष्टिकोण को परिलक्षित करता है।

(प) गांधीवादी दर्शन – गा¯धी का दर्शन सादा जीवन उच्च विचार पर आधारित है, परन्तु यह विचार यह दर्शाता है कि केवल भौतिक विकास ही सुख प्राप्ति का साधन नहीं है। वे एक ऐसे मानव का विकास करना चाहते हैं, जो नैतिक मूल्यों से परिपूर्ण हो। आज के युग में आर्थिक विकास नैतिकता की उपेक्षा करता है। आज का मानव तो न्यूनतम प्रयास में अधिकतम संतुष्टि को प्राप्त करना चाहता है। परन्तु यह केवल भौतिकतावाद के पीछे भागने से नहीं, वरन नैतिकता व प्रकृति को साथ रखकर भी प्राप्त की जा सकती है। अर्थात गांधीवादी दर्शन आदर्शवाद पर आधारित है।

(पप) स्वदेशी – गांधी ने स्वदेशी को आर्थिक विकास का व्यापक रूप देते हुए कहा कि शहरों व बड़ी विदेशी कंपनियों द्वारा ग्रामीणों व गरीबों का शोषण बंद किया जाना चाहिए। स्वदेशी के माध्यम से गांधी लघु कुटीर व हस्तशिल्प उधोगों को संरक्षण प्रदान करना चाहते हैं। स्वदेशी को प्रोत्साहन देने के लिए चरखा व खादी वस्त्रों के प्रयोग को बढ़ावा दिया। स्वदेशी गांधी के सत्याग्रह की उपज है। यह एक रचनात्मक कार्य है। गांधी ने स्वदेशी को कामधेनु बताया जो हमारी समस्त इच्छाओं की पूर्ति करती है।

(पपप) विकेन्द्रीकरण – गांधी केन्द्रीकरण को हिंसा प्रतीक मानते हैं। यह गरीब व धनी के मध्य खाई को और चौड़ा कर देता है। गांधी चाहते हैं, कि उत्पादन इकाई आम जनता व विशेष रूप से गांवो तक पंहुचे, इससे रोजगार में वृद्धि होगी। विकेन्द्रीकरण से गांव आत्मनिर्भर बनेगें। गांधी ने विकेन्द्रीकरण की अवधारणा में राजनैतिक विकेन्द्रीकरण को जोड़ ग्राम स्वराज्य की अभिकल्पना की है। ग्राम स्वराज्य रामराज्य की प्राप्ति का मार्ग है। गांधी की चिंताए पूरी मानव जाति के लिए रही हैं इसलिए उन्होनें विकेन्द्रीकरण के माध्यम से सबसे निचले तबके के विकास की बात कही है।

(पअ) स्थानीय व ग्रामीण अर्थव्यवस्था का सशक्तिकरण – गांधी का मुख्य उद्देश्य समाज का सर्वांगीण विकास करना रहा है। जिसके लिए उन्होनें समग्र व बहुआयामी कार्यक्रम बनाए, जिसमें गांवों को प्रथम स्थान पर रखा। यदि विकास के कार्यक्रमों की शुरूआत गांवों से होगी तो यह देश समग्र विकास की ओर अग्रसर होगा। गांधी ने गांवों के पुर्ननिर्माण की योजना बनाकर गांवों के सशक्तिकरण की बात रखी। उन्होनें बैक टू विलेज का नारा भी दिया। गांधी के स्थानीय व ग्रामीण अर्थव्यवस्था के विकास में कृषि विकास प्रमुखता से शामिल है। गांधी ने सुस्थिर कृषि व जैविक कृषि की बात आज के युग में प्रासंगिक है। देश आजाद होने के बाद गांधी के विकास मॉडल को प्राथमिकता से देखा जा रहा है। यह सुस्थिर विकास, स्थानीय व ग्रामीण सशक्तिकरण, आर्थिक प्रगति की आत्मनिर्भरता को सदैव प्रेरित करते रहेगें।

(अ) मानव विकास – गांधी मानव का संपूर्ण विकास करना चाहते हैं। मानव का भौतिक व नैतिक दोनों प्रकार का विकास। शारीरिक व बौद्धिक श्रम के माध्यम से मानव का संतुलित विकास करना चाहते हैं। वे एक ऐसे मानव की कल्पना करते हैं, जो चारों पुरूषार्थों व चारों सुखों से परिपूर्ण हो। मानव के जीवन का मुख्य उद्देश्य भी धर्म, अर्थ, काम व मोक्ष को प्राप्त करना है। इसके बिना परिपूर्ण मानव की कल्पना नहीं की जा सकती। चार सुखों में शरीर, मन, बुद्धि व आत्मा का सुख शामिल है। वे मानव की संतुष्टि को आवश्यकताओं को कम करने पर जोर देते थे। गांधी मानव विकास के लिए स्टैण्डर्ड ऑफ लिविंग से पहले स्टैण्डर्ड ऑफ लाईफ (नैतिक मूल्यों) को महत्व देते हैं।

(अप) अहिसां व नैतिकता पर आधारित व्यावसायिक गतिविधियां – गांधी आर्थिक गतिविधियों को नैतिकता व अहिसां पर आधारित कर देखते हैं। यह शोध पत्र भी आर्थिक विकास के लिए व्यवसायों व आर्थिक संस्थानों के लिए नैतिकता पर आधारित गाईड लाईन पर फोकस करना चाहता है। जैसा कि उचित व्यापार, कॉपरेट, सामाजिक जिम्मेदारी और सुस्थिर पूर्ति श्रृंखला के एक जिम्मेदार व्यापारी, आर्थिक लेन देन में सहयोग को बढ़ावा देते हैं। व्यापारी अपनी अधिकतम संतुष्टि को अहिसां व नैतिकता के आधार पर मापें।

(अपप) सुस्थिर विकास – गांधी एक ऐसे विकास के पक्षधर थे, जो पर्यावरण को सुरक्षित रख सके। जिसमें हम जैविक कृषि, नवीकरणीय उर्जा, कचरे का प्रबन्धन व सुस्थिर उपभोग व्यवस्था को शामिल करते हैं। गांधी कहते हैं, कि यदि हम प्रकृति का शोषण करेगें तो प्रकृति हमें एक दिन नष्ट कर देगी। इसलिए सुस्थिर विकास के लिए प्रकृति का दोहन करना चाहिए। यह परम्परागत तकनीक व आधुनिक सुस्थिर तकनीक को एक साथ लाने के रास्ते को बताएगी। गांधी ने प्रकृति व मानव की आत्मनिर्भरता को पहचाना व सुस्थिर विकास की बात

की है। अति उपभोग से बचाव पारिस्थितिकी संतुलन, प्राकृतिक संसाधनों का दोहन इसी की वकालत करते नजर आते हैं।

(अपपप) प्रन्यास सिद्धान्त – गांधी के लिए प्रन्यास सिद्धांत एक गतिशील अवधारणा है। यह उनकी मौलिक देन है। इस सिद्धांत का आधार ईशोपनिषद है, जो बताता है कि अखिल ब्रह्माण्ड में जो कुछ भी जड़ चेतन स्वरूप में है वह समस्त ईश्वर में व्याप्त है। ईश्वर को साक्षी मानते हुए इसे त्याग पूर्वक भागते रहो। इसमें आसक्त मत हो। यह धारणा अपरिग्रह से जुड़ी है। आम संपत्ति का उपयोग सभी की भलाई के लिए किया जाना चाहिए। यह सिद्धांत संपत्ति पर व्यक्तिगत अधिकार को स्वीकार नहीं करता है। यह सिद्धांत पूंजीवादी समाज के दोषों का निराकरण अहिसांत्मक ढंग व नैतिकता के आधार पर करने का एक विश्वसनीय विकल्प प्रस्तुत करता है। यह आय की असमानता, गरीबी, अमीर–गरीब की खाई को पाटने का सही विकल्प देता है। इस सिद्धांत में उत्पादन के स्वरूप का निश्चय सामाजिक आवश्यकताओं के अनुरूप होता है। गांधी का मानना है, कि इसके पीछे ज्ञान व धर्म का सर्मथन है। प्रन्यास सिद्धांत में हम आर्थिक समानता के अवसरों का तलाश सकते हैं।

गांधीवादी विकास के दृष्टिकोण में सबका उदय, सबका विकास (सर्वोदय) व व्यक्ति व समाज का अखण्ड रूप से आर्थिक विकास चाहते हैं। वे हर व्यक्ति को सशक्त बनाना चाहते हैं। उसे अपने जीवन जीने की संपूर्ण क्षमता से परिचित कराते हैं। जिससे मानव को आत्मसंतुष्टि प्राप्त हो। उनके दृष्टिकोण में आर्थिक विकास तब है, जब गरीबी दूर हो, जो आज के परिप्रेक्ष्य में अतिआवश्यक है। गांधी का आर्थिक विकास तब है, जब व्यक्ति अपने आत्मसंघर्ष से उभरे व स्वंय की समझ से आगे बढ़े।

गांधी के आर्थिक विकास का दृष्टिकोण समाजिक न्याय, पर्यावरणीय सुस्थिरता, आध्यात्मिक विकास, व्यक्ति, ग्राम व समाज का संपूर्ण विकास के इर्द गिर्द घूमता है। गांधी के आर्थिक विकास के सिद्धांत व विचार आर्थिक विकास के अध्यायों को निरन्तर प्रभावित करते रहेगें व एक सुस्थिर विश्व की कल्पना को साकार करने में सदैव कारगर होगें।

<u>चुनौतियां :–</u>

आज के युग में आर्थिक विकास के गांधीवादी मॉडल को कई चुनौतियों का सामना करना पड़ रहा है जो निम्न हैं :–

1. व्यापारिक मुकाबले करने और आर्थिक प्रगति की जंग लड़ने में चुनौतियां हैं।
2. गांधीवादी मॉडल स्वदेशी, ग्राम स्वराज्य और आर्थिक आत्मनिर्भरता को प्राथमिकता देता है, जबकि व्यापारिक मानदण्डों में विदेशी निवेश, वित्तीय एकीकरण की आवश्यकता है। इसके परिणामस्वरूप संघर्ष उत्पन्न होता है अर्थात गांधीवादी आर्थिक विकास का दृष्टिकोण वर्तमान व्यापारिक व आर्थिक नीतियों से मेल नहीं खाता है।
3. बढ़ती जनसंख्या व रोजगार की चुनौती का सामना गांधीवादी मॉडल को करना पड़ रहा है। गांधीवादी मॉडल को इन चुनौतियों का समाधान ढूंढने की जरूरत है। गांधीवादी आर्थिक मॉडल एक विचारधारा है जो मौलिक रूप से महात्मा गांधी के आदर्शों व सिद्धांतों पर आधारित है। परन्तु इसे चलाने में कई चुनौतियां वर्तमान में हमारे सामने हैं।
4. आधुनिक आर्थिक मॉडलों के सामने गांधीवादी मॉडल को आर्थिक विकास की गति में कई संकटों का सामना करना पड़ सकता है। जिससे आर्थिक विकास की गति धीमी पड़ सकती है।

5. ग्लोबल समरसता, आपसी सहयोग पर आधारित गांधीवादी मॉडल को विभिन्न देशों के साथ मिलाना व ग्लोबली इसकी उपयोगिता को प्रभावित करना चुनौतीपूर्ण हो सकता है।

6. गांधी जी ने आर्थिक समानता और उदारीकरण को प्रमुखता दी है, परन्तु इसको वास्तविकता के धरातल पर उतारने में धन व संसाधनों के अधिभार के वितरण में अनियमितता व व्यवस्था में कमी की चुनौती हो सकती है।

चुनौतियों के लिए सुझाव :–

गांधीवादी आर्थिक मॉडल सामरिक न्याय को प्राथमिकता देता है। इसे सुनिश्चित करने के लिए समान अवसरों की पंहुच, आवंटन के लिए प्रभावी मार्गदर्शन और प्रभावी कानूनी व्यवस्था की आवश्यकता है। इसके लिए लोकतांत्रिक पक्रियाओं को सुधारने और लोगों को जागरूक करने के लिए जनसंचार के माध्यम सहित संधर्ष की आवश्यकता हो सकती है। गांधीवादी आर्थिक मॉडल का मुख्य तत्व स्वदेशी व स्वावलंबन है। इसको प्रोत्साहन करने के लिए लघु व कुटीर उधोगों व ग्रामीण क्षेत्रों के विकास के लिए नीतियां बनें व सरकारें ऐसी उधमिता को प्रोत्साहित करने के लिए सुविधाएं प्रदान कर सकती हैं। हाल ही में मोदी जी ने लोकल फोर वोकल के जरिए जनता को देश में बनें उत्पादों को खरीदने के लिए और देश में ही उत्पादों का निर्माण करने का संदेश दिया है।

गांधीवादी आर्थिक मॉडल को सफल बनाने के लिए शिक्षा प्रसार व जागरूकता का महत्वपूर्ण योगदान होना चाहिए। इसके लिए सार्वजनिक जनसंपर्क कार्यक्रम, सामुदायिक सदस्यता, स्कूल व महाविधालय के पाठ्यक्रम में गांधीवादी विचारों का समावेश करना चाहिए।

गांधीवादी आर्थिक मॉडल को संरचनात्मक बदलाव की आवश्यकता है ताकि सामाजिक न्याय, आत्मनिर्भरता व समरसता के मूल्यों को संगठित रूप स अपनाया जा सके।

संदर्भ सूची :–

1. सौरभ सत्यभामा (2019) महात्मा गांधी के आर्थिक विचारों की वर्तमान प्रासंगिकता, प्दजमतदंजपवदंस श्रवनतदंस वि त्मअपमू – त्मेमंतबी पद ैवबपंस ैबपदबमए टवस 17 प्नम 1ए च्ह 125.130ए प्प्छ 2347.5145
2- तिवारी आर राजनारायण (2019½ Gandhi as an Environmentalist Indian Journal of Medical Research, https://www.ncbi.nlm.nih.gov>pmc
3. ठक्कर उषा (2011) विकास का गांधीवादी परिप्रेक्ष्य, गांधीवादी अध्ययन केन्द्र के शोध जर्नल https://www.mkgandhi.org>articles
4. जे.सी. कुमाराप्पा ''गांधी के नजरिये से आर्थिक समाज''
5- अय्यर एन. राघवन ''गांधी और आर्थिक विकास''
6- Rajindar K. Koshal and Manulika Koshal - Gandhian Economic Philosophy. The American Journal and Economic and Sociology. Vol 32 N22 (Apr.1973) PP 191-209 (19 pages) Published by Wiley.
7- Gandhian Model of Development and world peace – R.P. Mishra, concept publishing Company, New Delhi, Edition-2006, ISBN 8170222273.
8- Gandhian Economic thought – Dr. B.G. Radha Krishna, University of Mysore, Mysore, Edition – 1991.